5 अगस्त 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

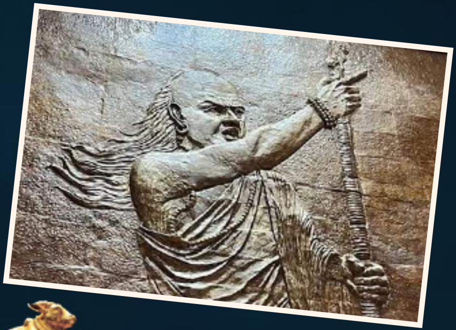

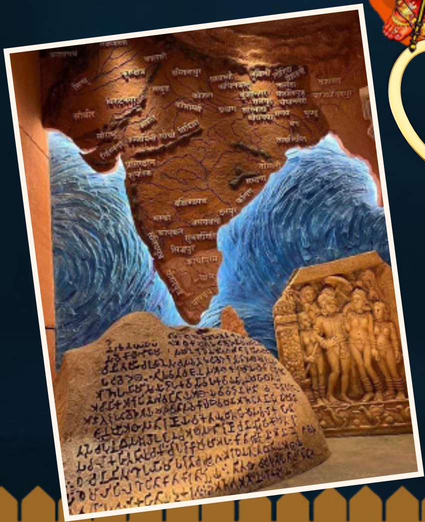

नए सांसद भवन में लगा भारत का नक्शा जो मौर्यकाल के साम्राज्य को दर्शाता है, व भारत के गौरवशाली इतिहास की अखंडता का प्रमाण है। जिसे देख भारत में रहने वाले प्रत्येक भारतीय हमेशा अपने देदीप्यमान इतिहास को याद करते हुए अखंड भारत की आकांक्षा करते हैं।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्ते लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अगस्त 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 02
•••
सावन / कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

अखंड भारत हमारे मानस पटल पर अंकित है। अखंड भारत का सपना एक दिन साकार होगा। भारत का विभाजन अटल सत्य नहीं है। विश्व का ऐतिहासिक सत्य है कि किसी भी देश का विभाजन स्थायी नहीं होता, इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। 1905 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया था लेकिन 1911 में फिर वह एक हो गया। दो हजार साल पहले इज़राइल पूरी तरह समाप्त हो गया था लेकिन 1948 में फिर से वह अखंड राष्ट्र बना। जर्मनी का भी विभाजन हो गया था किन्तु वह पुनः एक हो गया। विभाजन करने वाली बर्लिन की दीवार गिरा दी गई। दोनों वियतनाम एक हो गए। सोवियत संघ से मध्य एशियाई देश अलग होकर पुनः स्वतंत्र राष्ट्र बन गए । इसी तरह कोरिया भी एक होगा तथा बहुत शीघ्र चीन से तिब्बत पुनः मुक्त होगा और सबसे बड़ा उदाहरण तो यह है कि विशाल ब्रिटिश साम्राज्य भी स्थाई नहीं रहा।

भारत का विभाजन विश्व की बहुत बड़ी दुखान्त त्रासदी थी। सम्पूर्ण स्वतंत्रता की जगह हमें मिला कटा-फटा भारत। अंग्रेजों ने इसे सत्ता हस्तान्तरण तथा एक उपहार बताया था। भारत का विभाजन हमारी आस्थाओं पर बहुत बड़ा विश्वासघात था। लार्ड माउंटबेटन पं. जवाहरलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना जैसे सात व्यक्तियों ने भारत के करोड़ों लोगों के भाग्य का निर्णय कर दिया।

वर्तमान में हम विचार करें तो भारत से अलग कर दिए गए सभी देश, वह पाकिस्तान हो, श्रीलंका हो, बंग्लादेश हो, अफगानिस्तान हो, भूटान हो, नेपाल होए म्यान्मार तथा तिब्बत कोई भी देश सुखी नहीं है। सभी देशों का अंतर्मन भारत को अखंड देखना चाहता है। भारत के साथ रहकर ही इन देशों का भविष्य उज्जवल हो सकता है।

वर्तमान में भारत की विश्व पटल पर बढ़ती हुई प्रतिष्ठा और भारत की बढ़ती हुई शक्ति इन देशों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। हम सब भारतवासियों को भारत को वह अखंड स्वरूप देने के लिए पुनः संगठित होकर भारत माता के अखंड स्वरूप की स्थापना करनी होगी। वह दिन दूर नहीं जब हम भारत माता के अखंड स्वरूप का साक्षात् दर्शन करेंगे।

अखंडभारत और आजादी

अनव रघुवंशी

प्राचीनकाल के 7 द्वीपों के जम्बूद्वीप के 9 खंडों में नाभिखंड को अजनाभखंड भी कहते हैं जो भारतवर्ष बना जिसकी भुजाएँ, ईरान, अफगान के हिंदूकुश से अरुणाचल तक पूर्व में कश्मीर से उत्तर के श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड इंडोनेशिया तक थी, भौगोलिकता के साथ-साथ अपने शासन-प्रशासन में भी अक्षुण्ण था। पर अगर पुराने नक्शे से आज के नक्शे को मिलाएंगे तो यह स्पष्ट समझ पड़ेगा कि इतने बड़े प्रांत को जो एशिया का सब-कॉन्टिनेंट कहा जाता था, उसे मानवीय मनमुटाव और बिना किसी दूरदर्शिता के कई खंडों में खंडित कर दिया गया है।

नए संसद भवन में लगे भारत का नक्शा जो अशोक मौर्यकाल के साम्राज्य का है वह भारत के गौरवशाली इतिहास की अखंडता का प्रमाण है। जिसे देख भारत में रहने वाले हिंदूवादी हमेशा अपने दैदीप्यमान इतिहास को याद करते हुए अखंड भारत की आकांक्षा करते हैं। वही अखण्ड भारत जो सदियों पहले अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों जितना विशाल और उन्नत हुआ करता था। वही अखंड भारत जिसके पास बैरियों से लड़ने के लिए लाखों लोगों की सेना तत्पर रहती थी। वही अखंड भारत जो उम्दा व बेहतरीन सिल्क, सोना चांदी और कई अलग विलक्षण वस्तुओं का व्यापार करने में सहायक था। भारतवर्ष ने उस समय से ही चीन, कोरिया, जापान, ईरान, अफगान, यूरोप और अरेबिया को सिल्क रूट के जरिए सभ्यता के विकास में अहम भूमिका निभाई है और वह ही धर्म-तकनीक-संस्कृति के आदान-प्रदान का मुय स्तंभ बना। आज वही अभंगुर से भंगुर बन, अखण्ड से खंडित बन समुचित व छोटे-छोटे देशों में विभाजित हो अनर्गलता में व्यस्त है।

15 अगस्त 1947 को बड़ी जद्दोजहद के बाद भारत अंग्रेजों से आजाद हुआ। बेशक ये आजादी का संघर्ष आसान नहीं था पर भारत को आजाद करने के पीछे अखंड भारत की परिकल्पना ने अफगान, पाक, बंगाल, नेपाल जो पूर्ण भारतवर्ष का निर्माण करते हैं उन्हें खंडित करके काफी बी कीमत चुकाई है। वह आजादी का अलग ही जश्न होता जब भारतवर्ष अखंडित रहता। भारतवर्ष जो **वसुधैव कुटुम्बकम्** जैसी परोपकारी भावनाओं को मानता था वहीं पर विलायती शासकों ने एकता, अखंडता जैसी हितकारी भावनाओं को दरकिनार कर केवल अपनी दाल गलाने हेतु धर्म व भड़काऊ विचारों को शस्त्र बनाकर बँटवारे जैसी निंदनीय हरक़त की।

आइए समझते हैं कि कैसे अखंड भारत के अंगों को उससे अलग किया गया:

- ईरान जो पारस्य देश (आर्यों की एक शाखा) था, वह भारत का ही हिस्सा हुआ करता था। प्राचीन गांधार और कंबोज आज का अफगान वहाँ महाभारत काल में शकुनी का शासन था। इस पूरे क्षेत्र में हिंदू साही और पारसी राजवंश का ही शासन था पर अरब, तुर्क और आखिर में ब्रिटिश जिन्होंने 26 मई 1876 को रूस और ब्रिटेन के बीच हुई गंडमक संधि के बाद अफगानिस्तान को एक बफर स्टेट बना दिया और 18 अगस्त 1919 को अखंड भारत में से एक और हिस्सा हट गया।
- अफगानिस्तान से पहले ब्रिटेन ने भूटान को भारत से अलग कर दिया। वही भूटान जिसका नाम संस्कृत के भू-उत्थान से बना हुआ है।
- तिब्बत जिसके साथ भारत का सदियों पुराना रिश्ता है जिस पर शाक्यवंशियों के बाद चीन ने कब्जा कर लिया। 1907 में चाइना और ब्रिटिश भारत के बीच हुई बैठक के बाद इसे दो भागों

में बांट दिया गया जिसमें पूर्व का हिस्सा चीन का और दक्षिणी हिस्सा लामा के पास रहा, 1951 में इसे स्वायत्त राज्य घोषित कर दिया गया।

❖ सर्वेश्वर सर्वातर्यामी दीनानाथ श्रीराम जी की अर्धांगिनी राजा जनक की ज्येष्ठ पुत्री सीताजी का जन्म जिस नेपाल के जनकपुर में ही माना जाता है उसे भी 1904 में भारत से विभाजित कर आजाद देश का दर्जा मिला।

❖ बौद्ध धर्म और संस्कृति का अशोक काल में पूर्वी केंद्र, बर्मा यानी म्यांमार जो ब्रह्मदेश नाम से भी प्रख्यात है, उसे भी 1937 में अंग्रेजों ने भारत से अलग कर दिया था।

❖ 1945 में पाकिस्तान और बांग्लादेश भी भारत से अलग हो गए तब बांग्लादेश पाकिस्तान का ही अंग था जिसे भारत ने 1971 की जंग के बाद अलग देश बनाया।

❖ जहाँ राजाराम ने लंकेश को हराकर विजय घोष बजाया था, जहाँ इंटरनेशनल रामायण रिसर्च सेंटर था, उसे भी ब्रिटिशर्स ने 1935 में भारत से अलग कर दिया।

स्वतंत्रता दिवस के ठीक 1 दिन पूर्व भारत माता को दो टुकड़ों में बांट दिया गया। 14 अगस्त को अखंड भारत दिवस मनाया जाता है, भारत का आधे से अधिक भूगोल अभी विदेशियों / विधर्मियों के कब्जे में है। बँटवारे के दौरान लाखों बेकसूर लोगों पर आतताइयों द्वारा अत्याचार, मार-काट जैसी रूह कंपा देने वाली कई गाथाएं हैं जो विभाजन के भुक्तभोगी और प्रत्यक्षदर्शियों पर हुए जुल्म-ओ-सितम के गूंज रूपी अवशेष हैं। और ये गाथाएं हमें चीख-चीखकर ये सीख देती हैं कि क्षणिक सुख-सुविधाओं की होड़ में जाने-अनजाने में ऐसे बीज बोते हैं, जिससे न केवल फसल वरन पूरे खेत खराब हो जाते हैं। उदाहरण के तौर पर पुराने समय में तो अखंड भारत या कोई और प्रांत को नासमझी और बिना किसी दूरदर्शिता के बांट दिया उसके परिणामस्वरूप हम सब अलग हो गए। पहले कहीं दूसरे पड़ोसी देश जाने में कोई हिचक नहीं थी, आपस में मेल-मिलाप था, संस्कृति, कला और कई अनोखी चीजों का आदान-प्रदान था। पर अब पड़ोसी देश के लोगों से बात करना मात्र ही उस व्यक्ति को कटघरे में खड़ा कर देता है, जासूस गुप्तचर जैसे खिताब दिला देता है। अखंड भारत के विशाल संस्कृतिनिष्ठ विचारतत्व को न समझने वाले नेताओं ने जिस पाकिस्तान के निर्माण पर अपनी मोहर लगाई थी, वही पाकिस्तान आज आतंकवाद के सैकड़ों अड्डों को चला रहा है एवं आतंकी सरगनाओं को पाल-पोस रहा है। संकल्प करना चाहिए कि हम अपने देश को पुनः परम वैभवशाली अखंड भारतवर्ष के रूप में देखेंगे। पर इस संकल्प से पहले हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत को और विभाजित करने वाली मांग जैसे खालिस्तान का निर्माण आदि जैसी चिंगारियों को भाप न मिले। आज तो भारत में कई और पाकिस्तान बनाने के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। हमारा सनातन राष्ट्र इस प्रकार के हजारों जख्मों से त्रस्त है। इन जख्मों के स्थाई इलाज के लिए भारत की अखंडता अति आवश्यक है। इसके लिए समस्त भारतवासियों को एकता और संगठन की भावना उत्पन्न करनी होगी। सबको जानना होगा कि अखंड भारत ना केवल एक राजनैतिक एवं भौगोलिक अवधारणा है वरण प्रत्येक भारतवासी की निष्ठा एवं श्रद्धा है।

अतः समय की शदीद मांग यह है कि पहले प्रत्येक भारतवासी को मजीद मजबूत बनना होगा और भारत के सभी टुकड़ों को जोड़ने का प्रयास करना होगा, धर्म व जाति के नाम पर भड़काऊ और ज्वलंत मुद्दों को ला तअल्लुक कर दरकिनार करना होगा फिर अखंड भारत बनना कोई दुरुह कार्य नहीं है।

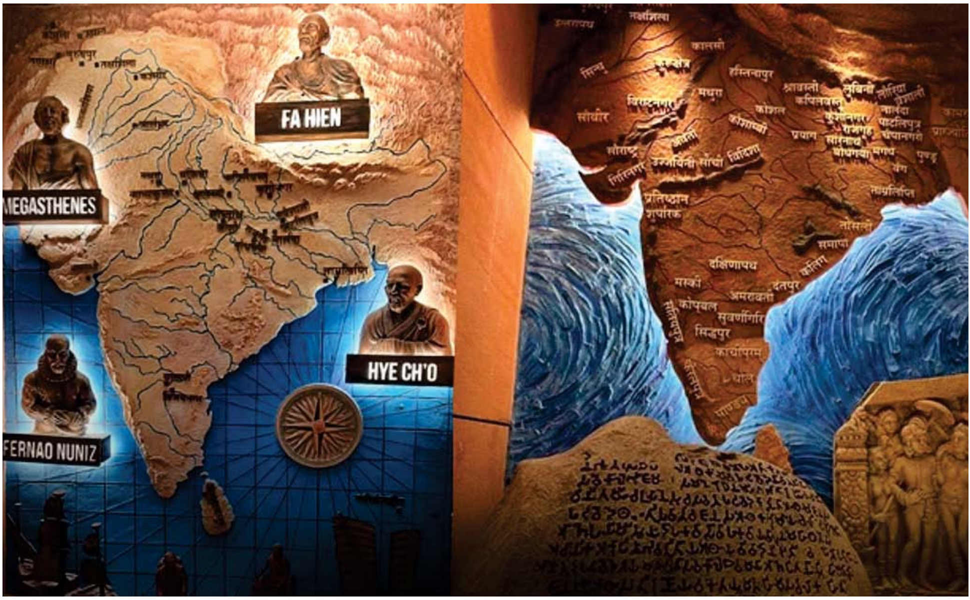

भगवान महावीर का 2550वां निर्वाण वर्ष (भाग-2)

कमल जैन, दिल्ली

भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में प्रारंभ की गई इस श्रृंखला में पिछले अंक में जैन का अर्थ, जैन धर्म की ऐतिहासिकता एवं भगवान महावीर के संक्षिप्त जीवन परिचय के विषय में चर्चा की गई थी। इस अंक में हम भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित कुछ मुख्य सिद्धांतों पर चर्चा करेंगे। भगवान महावीर ने अपने साधु और साध्वियों के लिए पाँच महाव्रतों की शिक्षा दी जिनका अखण्ड एवं निर्दोष पालन प्रत्येक जैन साधु-साध्वी के लिए आवश्यक है। वे पाँच महाव्रत हैं- 1) अहिंसा 2) सत्य 3) अचौर्य 4) ब्रह्मचर्य 5) अपरिग्रह।

अहिंसा- प्रत्येक भारतीय दर्शन में अहिंसा को प्रमुखता दी गई है। परन्तु जैन धर्म में अहिंसा को विशेष महत्व के साथ सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। अन्य दर्शनों की अपेक्षा जैन दर्शन में अहिंसा पर विशेष गहराई और सूक्ष्मता से विचार किया गया है। यह पाँच महाव्रतों में मात्र पहला महाव्रत ही नहीं है, अपितु अन्य सभी महाव्रत और नियम इस अहिंसा की सुरक्षा के लिए ही हैं, एक प्रकार से ऐसा भी हम कह सकते हैं। जहाँ पर अन्य दर्शनों की अहिंसा की सीमा समाप्त हो जाती है वहाँ से जैन दर्शन की अहिंसा प्रारंभ होती है। यहाँ केवल मनुष्य, पशु-पक्षी और कीड़े-मकौड़ों की ही नहीं अपितु अदृश्य सूक्ष्म जीवों की हिंसा का भी निषेध किया गया है। जैन दर्शन के अनुसार हिंसा मन से, वचन से अथवा काया से न तो स्वयं करनी है, न दूसरों से करानी है और न ही हिसा करने वाले की प्रशंसा अथवा समर्थन ही करना है। किसी के प्रति मन में बुरे विचार भी हिंसा की श्रेणी में आते हैं। दूसरों के लिए तो हिंसा वह बाद में है, पहले अपने लिए है। भगवान महावीर ने कहा- जिसकी तू हिंसा करता है, वह तू ही है। क्योंकि किसी अन्य प्राणी की हिंसा करने से अपनी ही आत्मा का अहित होता है। हिंसा में लिप्त आत्मा मोक्ष प्राप्त नहीं करती और इस संसार में ही जन्म-मरण के चक्र में फँसी रहती है। जैन धर्म के सबसे प्राचीन आगम आचारांग में भगवान महावीर ने कहा है कि किसी भी प्राणी अथवा जीव का हनन (घात) नहीं करना चाहिए, उन पर शासन नहीं करना चाहिए, उन्हें दास नहीं बनाना चाहिए, उन्हें सताना नहीं, उन्हें प्राणों से रहित नहीं करना चाहिए। यही धर्म शुद्ध, नित्य और शाश्वत है। जैन धर्म की अहिंसा प्राण लेने के निषेध से प्रारंभ होकर समता की उच्च भूमिका पर पहुँचकर ही ठहरती है। यहाँ अहिंसा के संदर्भ में समता का अर्थ है- आत्म तुलना। 'अत्तसम्मे मणिज्जे छप्पिकाए' अर्थात सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान समझो। यही समता जैन अहिंसा का मूल आधार है। जिसके सहारे अहिंसा विकसित और पल्लवित हुई है। एक इन्द्रिय वाले जीवों से लेकर पाँच इन्द्रिय वाले जीवों के प्रति अहिंसा की बात जितनी सूक्ष्मता से जैन धर्म में प्रतिपादित है, उतनी अन्यत्र नहीं। यहां प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। आत्मा की दृष्टि से सब जीव समान हैं। चाहे पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पति और वायु के मात्र एक इन्द्रिय वाले जीव हों, चलने-फिरने वाले कीड़े-मकोड़े, मक्खी-मच्छर आदि दो, तीन अथवा चार इन्द्रिय वाले जीव हों अथवा पशु-पक्षी एवं मनुष्य आदि सम्पूर्ण पाँच इन्द्रिय वाले जीव। सब की आत्माएं समान हैं और सब में एक जैसी शक्ति और योग्यता छिपी हुई है। इसलिए सूक्ष्म अथवा स्थूल, सभी प्रकार के प्राणियों की हिंसा का निषेध किया गया है। संभवतः विश्व के किसी भी दर्शन में अहिंसा को इतनी व्यापकता प्रदान नहीं की गई है जितनी जैन दर्शन में। **एसा सा भगवती** कहकर उसके प्रति पूज्यता का भाव व्यक्त किया गया है।

भगवान महावीर ने कहा है- **'सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं'**- अर्थात्- संसार के सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई भी नहीं चाहता। 'सव्वे पाणा परमाहम्मिया' अर्थात सभी प्राणी परम सुख के अभिलाषी हैं। इसलिए किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। काया से हिंसा करना तो बहुत दूर की बात है, भगवान महावीर कहते हैं- **मणसा वि न पत्थए** अर्थात् किसी प्राणी पर मन से भी द्वेष न करो। जैन साधु और साध्वियों के लिए अहिंसा की कोई सीमा नहीं है। इसीलिए उनके व्रतों को महाव्रत कहा गया है। उसमें सामान्यतया किसी प्रकार की किसी छूट या अपवाद मार्ग का कोई प्रावधान नहीं है। परन्तु जैन गृहस्थ, जिसे जैन श्रावक कहा जाता है, के व्रत उसकी स्थिति के कारण कई छूटों के साथ होते हैं। इसलिए उनको अणुव्रत कहा गया है। उसको चलने-फिरने वाले निरपराधी प्राणी को जानबूझकर मारने का त्याग होता है। स्वयं, परिवार, समाज अथवा राष्ट्र की रक्षा के लिए किसी अपराधी जीव की हिंसा हो जाने से उसका यह अहिंसा व्रत भंग नहीं होता। जैन साहित्य एवं हमारे देश के इतिहास के अनुसार कई जैन श्रावकों ने अपने जैन धर्म का पालन करते हुए भी राष्ट्र के लिए वीरतापूर्वक युद्ध ही नहीं किए अपितु युद्ध के आपात् समय में सेना एवं राष्ट्र की व्यवस्था के लिए अपने विपुल कोष राजा को समर्पित कर दिए। महाराणा प्रताप को मुगलों से युद्ध करने के लिए अपने संपूर्ण कोष का समर्पण करने वाले भामाशाह एक जैन श्रावक (अनुयायी) ही थे। इसी प्रकार अनेक जैन अनुयायियों ने स्वतंत्रता संग्राम में भी अपने प्राणों की आहुति दी। भगवान महावीर की अहिंसा कायरों की नहीं अपितु वीरों की अहिंसा है। अहिंसा के सिद्धांत का पालन करने से आज के हिंसाग्रस्त समाज, देश और विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

इंदौर में 8 साल के नाबालिग जैन बच्चे का खतना, जबरन मुसलमान बनाया, प्रतिबंधित संगठन पीएफआई से जुड़े साजिश के तार

अमन व्यास

पिछले दिनों इंदौर में 8 साल के मनन जैन को उसके पिता से दूर कर मन्नान अहमद बनाने का मामला उजागर हुआ है। साजिश में पीएफआई जैसा कट्टरपंथी संगठन भी शामिल है।

राजस्थान के बाड़मेर निवासी महेश कुमार जैन का विवाह जून 2014 में मध्यप्रदेश के शाजापुर की निवासी प्रार्थना शिवहरे के साथ हुआ था। जुलाई 2015 में प्रार्थना और महेश जैन को पुत्र हुआ था, उसका नाम मनन जैन रखा गया था। 2018 में प्रार्थना अपने मायके शाजापुर के एक विवाह में आती है। जब वह वापस अपने पति के साथ ससुराल जाती है, तो बस में रतलाम में पति महेश की नींद लग जाती है, उसी दौरान प्रार्थना को शाजापुर निवासी इलियास कुरैशी और उसके दोस्त, बेटे मनन के साथ भगाकर ले जाते हैं, तब बालक की उम्र मात्र 3 तीन साल रही होगी।

बाद में महेश पत्नी -बच्चे की गुमशुदगी की रिपोर्ट रतलाम में दर्ज करवाता है, पुलिस द्वारा खोजबीन करने पर प्रार्थना की लोकेशन गुजरात अहमदाबाद में मिलती है। पुलिस दोनों को बुलाकर बयान लेती है, क्योंकि प्रार्थना इलियास के साथ ही जाना चाहती है और 2 वर्ष का बालक कानूनन मां की अभिरक्षा में ही रहता है इसलिए पुलिस उन्हें जाने देती है। महेश अपने बच्चे के जीवन की रक्षा के लिए कई प्रयास करता है, राजस्थान में प्रकरण -आवेदन दर्ज करवाता है। उसे यह करने पर कई बार धमकियों से भरे फोन भी आते थे। बार-बार जगह बदलने और मोबाइल बदलने के कारण इलियास पकड़ में नहीं आता, किंतु जुलाई माह में वह प्रार्थना और मनन के साथ इंदौर के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र खजराना से पकड़ में आया है। अब मनन की आयु लगभग 8 वर्ष हो गई है।

इलियास के पकड़ में आने के बाद कई खुलासे हो रहे हैं।

1. इलियास ने बालक मनन जैन का नाम बदलकर मन्नान अहमद रख दिया है और जन्म प्रमाण पत्र में भी उसका यही परिवर्तित नाम है, पिता के नाम के स्थान पर इलियास अहमद लिखा हुआ है।

2. जबरन मतांतरण कर नाबालिग बच्चे को मुस्लिम बना दिया है, साथ ही उसका **खतना** भी कर दिया है जो मेडिकल में प्रमाणित हुआ है।

3. इलियास का संबंध प्रतिबंधित कट्टरपंथी संगठन **PFI** से होने के तथ्य सामने आ रहे हैं। जिन्होंने वर्षो तक इलियास के साथ रहकर मनन को कट्टरपंथी बनाने में साथ दिया।

4. 8 वर्ष का हो जाने पर भी मनन को स्कूल नहीं पहुंचाया गया, जबकि 6 वर्ष की आयु तक बच्चों का स्कूल में प्रवेश जरूरी है, वहीं उसे इस वर्ष मजहबी तालीम देने के लिए **मदरसे** में पहुंचाया जा रहा है।

5. अनेकों शहरों के मुस्लिम बहुल इलाकों ने इलियास को पनाह देने, पुलिस से बचने में सहयोग किया। अनेकों बार इलियास ने मोबाइल बदला ताकि उसे पुलिस पकड़ न पाए, इस हेतु उसे आर्थिक सहायता भी की गई होगी।

इलियास कुरैशी पर बालक के फर्जी जन्म प्रमाणपत्र बनवाने, खतना करवाने और मतांतरण करने पर इंदौर के खजराना थाना में आइपीसी की धारा 420,467,468,471 एवम् मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत अपराध क्रमांक 572/23 दिनांक 15/7/23 दर्ज हो गया है।

किंतु यह कितनी बड़ी साजिश है जिसमें एक अहिंसक मत के बच्चे को कट्टरपंथी, आतंकी, मानव बम बनाने के लिए सैकड़ों लोग कार्य कर रहे हैं।

राखी के बंधन निभाना

प्रेमा पहावा

भाई-बहन के अटूट रिश्ते का त्यौहार है रक्षा बंधन। यह दिन हर भाई-बहन के जीवन के सबसे अहम क्षणों में से एक होता है।

रक्षाबंधन का पर्व - श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्यौहार भाई-बहन के बीच प्रेम को नए आयाम देता है। इस दिन बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं। जीवन भर अपनी रक्षा के लिए भाई से कसम लेती हैं। राखी केवल एक धागा नहीं है यह एक अटूट बंधन की निशानी है। दुनिया में किसी भी भाई-बहन का रिश्ता केवल राखी की डोर पर नहीं टिका होता क्योंकि भाई और बहन के बीच के प्रेम को परिभाषित कर पाना आसान नहीं। चाहे कोई भी भाई अपनी बहन से लड़ें परंतु हर एक भाई अपनी बहन की दिल से रक्षा करता है। इस पर्व पर बहनें सुबह स्नान के पश्चात पूजा की थाली सजाती हैं। इस पूजा की थाली में कुमकुम, राखी, रोली, अक्षत, दीपक तथा मिठाई रखती हैं और घर के पूर्व दिशा में भाई को बैठाकर उसकी आरती करती हैं, माथे पर कुमकुम का तिलक लगाकर सिर पर अक्षत डालती हैं, फिर कलाई पर राखी बांधती हैं। अंत में मीठा खिलाती हैं और भाई-बहनों को उपहार भी देते हैं। रक्षा बंधन का यह पावन त्यौहार पौराणिक काल से चला आ रहा है। धर्मग्रंथों में रक्षाबंधन के त्यौहार का जिक्र भी है। वामनावतार नामक पौराणिक कथा में पर्व का जिक्र मिलता है। धर्म ग्रंथ के अनुसार राजा बलि ने यज्ञ संपन्न कर स्वर्ग पर अधिकार का प्रयत्न किया था परंतु इस दौरान देवराज इंद्र ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की और विष्णु जी वामन ब्राह्मण बनकर राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुंचे थे। गुरु के मना करने पर भी बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी।

वामन रूप में पहुंचे भगवान विष्णु ने तीन कदमों में ही आकाश, पाताल और धरती को नाप दिया और राजा बलि को रसातल में भेज दिया। इस दौरान राजा बलि ने अपनी भक्ति के दम पर विष्णु जी से हर समय अपने सामने रहने का वचन ले लिया। इससे लक्ष्मी जी को चिंता सताने लगी और तब वे महर्षि नारद मुनि की सलाह पर राजा बलि के पास गई और रक्षासूत्र बांधकर राजा बलि को अपना भाई बना लिया, बदले में लक्ष्मी मां अपने साथ भगवान विष्णु को ले आई। जिस दिन मां लक्ष्मी ने राजा बलि को रक्षासूत्र बांधा उस दिन श्रावस मास की पूर्णिमा तिथि थी।

रक्षाबंधन का जिक्र महाभारत में भी देखने को मिलता है। आज के युग में रक्षाबंधन का पवित्र त्यौहार हमारी संस्कृति की पहचान है। साथ ही हर एक भारतीय को अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए।

खुदीराम बोस

युग-युगांतर से भारत अपने शौर्य और पराक्रम के जाना जाता है। नव ऊर्जा, गर्म खून, अपने देश के प्रति समर्पण की यहाँ कई अलौकिक गाथाएं हैं। ऐसा ही एक उदाहरण 3 दिसंबर 1889 को बंगाल के मिदनापुर जिले में जन्मे खुदीराम बोस का है। माता लक्ष्मीप्रिया देवी पिता बाबू त्रैलोक्यनाथ बोस उम्र से पहले ही दिवंगत होने के कारण बड़ी बहन के हाथों इनका लालन-पालन हुआ। अच्छी तालीम के लिए हेमिल्टन हायर इंग्लिश स्कूल में इनका दाखिला हुआ, पर पढ़ाई में ज्यादा रूचि न होने के कारण उन्होंने जल्द ही स्कूल छोड़ दिया। कई सारे उपन्यास, पुस्तकें व तत्कालीन अखबारों से भारत की समृद्धता और उस पर अंग्रेज़ों का आखेट और कुदृष्टि से अवगत हुए। रोजमर्रा में अंग्रेज़ों के क्रुर व्यवहार ने उनके माथे का तवा गर्म कर ही रखा था तभी बहन द्वारा कहा जाना कि हम अंग्रेज़ों के गुलाम हैं, जैसे कई जुमलों ने उस तवे पर पानी के छींटे जैसा काम किया। भाप रूपी उनके अंदर अंग्रेज़ों से प्रतिशोध लेने की भावना और अपनी सरजमीं से भगाने के ख्यालों ने क्रांतिकारी सत्येंद्रनाथजी से मिलवाया। सत्येंद्रनाथ जी ने पिस्तौल चलाना सिखाया, रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने, 1905 में बंगाल के विभाजन के दौरान बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। **सांध्या और शजक्त, युगांतर, वंदेमातरम** जैसे अखबार जो अंग्रेज़ों के खिलाफ लिखने का साहस रखते थे उनको बंद करने के मामले में कलकत्ता चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड से उन्होंने बदला लेने की ठानी, उसको मारने का प्लान बनाया। मुजफ्फरपुर के एक क्लब में बम फेंका दुर्भाग्यवश किंग्सफोर्ड बच गया और खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर लिया गया। फांसी की तारीख आई, महज 18 साल दस महीने की उम्र में वंदेमातरम बोलते हुए और अपने धर्म ग्रन्थ गीता को हाथ में लेते हुए स्वयं ने फांसी का फंदा पहना। 11 अगस्त 1908 को 6:00 बजे उन्होंने देहत्याग कर अपना नाम भारत के उन शूरवीरों के साथ जोड़ दिया जिनकी गाथा अद्भुत अविस्मरणीय और सदैव उद्भासित है।

महिला सशक्तिकरणः नव युग का आदर्श

महिलाओं का सम्मान, समानता और सशक्तिकरण आजकल के समाज के आदर्शों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विषय एक ऐसा विषय है जो न केवल समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है, बल्कि इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है। महिला सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाना। महिला सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को समान अवसर प्रदान करना, उन्हें शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने की क्षमता देना। इसका मतलब है महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करना और उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने की प्रेरणा देना।

महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं में समानता और स्वावलम्बन की भावना को प्रोत्साहित करना। आजकल, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियाँ और कार्यक्रम चलाए जाते हैं। शिक्षा एक महिला के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय है जो उसे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाता है। सरकार ने विभिन्न शिक्षा योजनाएं शुरू की हैं जिनका मुख्य लक्ष्य है महिलाओं को शिक्षा के अवसर देना। इसके अलावा, नारी शक्ति समितियाँ, महिला बैंक, महिला केंद्र आदि कई संगठनों ने भी महिलाओं को सशक्त करने के उद्देश्य से कठिनाइयों को कम करने के लिए काम किया है। महिला सशक्तिकरण का महत्व व्यापक है। पहले भारतीय समाज में महिलाओं को गृहिणी बनाया जाता था और उन्हें शिक्षा, स्वतंत्रता और अधिकारों से वंचित रखा जाता था। लेकिन अब के वर्षों में हमारा सोचने का तरीका बदल गया है और महिला सशक्तिकरण को महत्व दिया जाता है। सोशल मीडिया में लाख बुराई है लेकिन सोशल मीडिया ने महिला को सशक्त बनाने के लिए काफी काम किया है। कई महिलाएं आगे बढ़कर आई हैं और दूसरे महिलाओं के लिए सपोर्ट सिस्टम बनी हैं। महिलाएं अब सरकारी नौकरी, उच्च शिक्षा, व्यापार आदि क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ रही हैं। महिला सशक्तिकरण की वजह से महिलाएं अपने सपनों को पूरा करने के लिए स्वतंत्र हैं और अपने जीवन के निर्णयों पर नियंत्रण रखती हैं।

महिला सशक्तिकरण का प्रभाव समाज के विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है। एक सशक्त महिला समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इससे महिलाओं को स्वतंत्रता और आत्मविश्वास प्राप्त होता है जो उन्हें सामरिक और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाता है। वे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण साझेदार होती हैं। उन्हें समाज में सम्मान, पहचान और स्थान मिलता है। महिला सशक्तिकरण के लिए समाज के सभी सदस्यों को सहयोग करना आवश्यक है। महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने, उन्हें शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ-साथ उनके विचारों, विचारधारा और सुरक्षा की गारंटी भी देनी चाहिए। सरकारी नीतियों के साथ-साथ, व्यापार, संगठन और सामुदायिक संगठनों को भी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कठिनाइयों को कम करने में अपना योगदान देना चाहिए।

संक्षेप में कहूं तो महिला सशक्तिकरण एक समृद्ध समाज के लिए आवश्यक है। महिलाओं को समान अवसर, शिक्षा, स्वतंत्रता और अधिकार देने से हम समृद्धि और समानता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। महिलाओं को सशक्त करने का काम आपका और मेरा है। चलो, हम सब मिलकर महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ें और एक बेहतर भविष्य का निर्माण करें क्योंकि महिला से यदि एक घर सशक्त बनेगा फिर उसकी बेटी भी सशक्त बनेगी।

राष्ट्रीय खेल दिवस

खेलों को शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इससे शरीर और मन में ताजगी रहती ही है। साथ ही साथ मांसपेशियाँ सुगठित हो जाती हैं। हम सभी जानते हैं खेल का हमारे जीवन में कितना महत्व है। खेल एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शारीरिक परिश्रम और कौशल से जुड़ी एक गतिविधि जो नियमों या रीति-रिवाजों के एक सेट द्वारा नियंत्रित होती है और अक्सर प्रतिस्पर्धात्मक रूप से की जाती है।

खेल दिवस - भारत में हर साल 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारत के फील्ड हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती का प्रतीक है, जिन्हें इतिहास में सबसे महान फील्ड हॉकी खिलाड़ियों में से एक माना जाता है। इस दिन को मनाने की घोषणा 2012 में पारित की गई थी और पहला राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त 2012 को मनाया गया था।

राष्ट्रीय खेल दिवस का महत्व - राष्ट्रीय खेल दिवस मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य देश के युवाओं के बीच खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करना है। 29 अगस्त का दिन महानतम भारतीय हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के सम्मान में चुना गया था, जिनका जन्म इसी दिन 1905 में हुआ था। इस दिन, राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समारोह आयोजित किया जाता है, जहां विभिन्न एथलीटों, व्यक्तियों और टीमों को सम्मान प्रदान किया जाता है और खेल में उनके योगदान के लिए पुरस्कार। राष्ट्रीय खेल दिवस दैनिक जीवन में खेल और शारीरिक गतिविधि के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी मनाया जाता है। पहला अवलोकन 2012 में किया गया था और तब से सरकार ने इस दिन को कई खेल-संबंधी परियोजनाओं की घोषणा करने के अवसर के रूप में उपयोग किया है।

राष्ट्रीय खेल दिवस मनाने का इतिहास - 2012 में भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय ने 29 अगस्त को देश के राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। राष्ट्रीय खेल दिवस का पहला उत्सव उसी वर्ष और तब से हर वर्ष मनाया जाता था। वर्ष 2023 में राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह की 12 वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी। महान फील्ड हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती मनाने के लिए 29 अगस्त को चुना गया।

मेजर ध्यानचंद कौन थे?- भारत के संभवतः महानतम फील्ड हॉकी मेजर ध्यानचंद की विरासत का सम्मान करने के लिए 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया जाता है। उनके असाधारण खेल के कारण भारत ने 1928 से 1964 तक आठ ओलंपिक में से सात में फील्ड हॉकी प्रतियोगिता जीती। ध्यानचंद ने 1928, 1932 और 1936 में लगातार तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते। बीबीसी द्वारा उन्हें हॉकी का मोहम्मद अली कहा गया और उनके बेहतर गेंद नियंत्रण कौशल के कारण उन्हें हॉकी का जादूगर या जादूगर का उपनाम भी मिला। ध्यानचंद की 1979 में लिवर कैंसर से पीड़ित होने के बाद मृत्यु हो गई लेकिन फिर भी वह भारतीय और विश्व हॉकी में एक महान हस्ती बने हुए हैं। ध्यानचंद को 1956 में भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, कई पुरस्कार हैं जो उनके सम्मान में नामित किए गए हैं। खेल और खेलों में जीवन भर की उपलब्धियों के लिए मेजर ध्यानचंद पुरस्कार सबसे प्रसिद्ध है। 2021 में, युवा मामले और खेल मंत्रालय ने उनके सम्मान में राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार कर दिया।

राष्ट्रीय खेल दिवस का उत्सव - राष्ट्रीय खेल दिवस मनाने के लिए, भारत सरकार टीमों और खिलाड़ियों को कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान करती है। खेल नायकों को खेल में उनके योगदान के लिए पहचाना जाता है और एक समारोह आयोजित किया जाता है जहां भारत के राष्ट्रपति भवन में विभिन्न पुरस्कार प्रदान करते हैं। एक व्यक्ति के रूप में, आप अपनी पसंद के खेल आयोजनों को आयोजित कर उनमें भाग ले सकते हैं। अपने दोस्तों के साथ एक टीम बनाएं या राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर आयोजित स्कूल आधारित कार्यक्रमों में भाग लें। मेजर ध्यानचंद और देश के अन्य ऐतिहासिक खिलाड़ियों और भारतीय खेलों में उनके योगदान के बारे में और जानें। शारीरिक तंदुरुस्ती के लिए खेल खेलना भी जरूरी है। इस संदेश को अपने साथियों के बीच फैलाएं और उन्हें भी खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

तो खेलते रहिए और आपने आप को तंदुरुस्त बनाए रखिए।

वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़

वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़ ने अपनी वीरता और कूटनीति से मुगल शासक औरंगजेब की नींद उड़ा दी थी। उनके अदम्य साहस ने ही मारवाड़ के वारिस अजीत सिंह के प्राणों की रक्षा की। अपनी जन्मभूमि मारवाड़ को मुगलों से मुक्त करने वाले वीर दुर्गादास का जन्म 13 अगस्त 1638 में ग्राम सावला में हुआ था। बाल्यकाल में उनका लालन-पोषण लुनावा नामक गाँव जो वर्तमान में लुणावास के नाम से जाना जाता है, वहाँ उनकी माता नेतकुँवर ने किया। माता ने दुर्गादास में स्वाभिमान और देशभक्ति के संस्कार बाल्यकाल में कूट-कूट कर भर दिये थे। मारवाड़ के शासक जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र अजीत सिंह को दुर्गादास ने औरंगजेब के चंगुल से बचाया और वयस्क होने पर शासन की बागडोर सौंपने में अपने प्राणों की बाजी लगाकर भरपूर मदद की।

दुर्गादास ने मारवाड़ के सामंतों के साथ मिलकर मुगलों की सेना से छापामार युद्ध किया और औरंगजेब की मृत्यु के बाद अजीत सिंह को जोधपुर का महाराजा घोषित किया।

दुर्गादास अपने कर्तव्यों का पालनकर महाकाल की शरण में उज्जैन आ गये। 22 नवम्बर 1718 में 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। लाल पत्थरों से बनी छत्री अभी भी चक्रतीर्थ उज्जैन में माँ क्षिप्रा के तट पर स्थित है। यह स्थान स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों और हम सब के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है।

नर हो, न निराश करो मन को

मैथिलीशरण गुप्त

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला।
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ।
तुम स्वत्त्व सुधारस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो।
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
मरणोत्तर गुंजित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे।
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

प्रभु ने तुमको कर दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो।
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को।।

पर्यावरण संरक्षण का उत्सव है वर्षाकाल

श्रीमती अचला शर्मा

भूदेवी की प्रिय वर्षा ऋतु का शुभ आगमन हो चुका है और धरती ने हरित परिधान धारण कर लिया है। नदियों का उत्साह उफान पर है और ताल-तलैया, कुएं बावड़ी जीवन रस से लबालब हैं। यह ऋतु मानव को प्रकृति की अनमोल देन से कम नहीं है। यही कारण है कि इस ऋतु को सहेजने व इसका पर्याप्त लाभ उठाने की दृष्टि से पूर्वजों ने इस समय अनेक व्रत, उत्सव व परम्पराओं की स्थापना की, उनका अनुपालन हो इसलिये उन्हें धार्मिक आधार से जोड़ दिया। यही कारण है कि भारत के प्रत्येक प्रान्त के अंचलों में इस ऋतु में अनेक प्रकार की प्रथाएं, मेले व उत्सव प्रचलन में आए सभी स्थानीय दृष्टि से पर्यावरण के संवर्धन व मानव जीवन के पृथ्वी पर सुंदर भविष्य व सहजीवन का एक सुंदर उदाहरण हैं।

आज जब जलवायु परिवर्तन के कारण कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं लू का प्रकोप तो कहीं असमय वर्षा, हिमपात व उपद्रव के समाचार आते हैं तो हम चिंतित हो उठते हैं। परन्तु हम चाहें तो अपने स्तर पर भी प्रयास कर प्रकृति को अपना वन्दन प्रेषित कर सकते हैं। इस ऋतु में पर्वतीय व पथरीले क्षेत्र के निवासी छोटी-छोटी डबरियाँ व सामूहिक प्रयास से छोटे तालाब इत्यादि का निर्माण कर सकते हैं। मालवा प्रान्त के झाबुआ में शिवगंगा अभियान इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अपने आस-पास यदि भूमि उपलब्ध है तो वहाँ पर नहीं तो सार्वजनिक उद्यानों में नीम, अशोक, आंवले जैसे औषधीय व मध्यम बडत वाले पौधे रोपें व उनकी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था करें। हर्ष का विषय है कि विगत कुछ समय से कुछ सामाजिक संस्थाएं इस प्रकार के कार्य करने में अपनी रुचि दिखा रही हैं। आम समाजजन भी व्यक्तिगत रूप से पूर्वजों की स्मृति, जन्मदिवस इत्यादि अवसरों पर एक पौधा लगाने की परेपरा विकसित कर सकते हैं व शुभ अवसरों पर तुलसी, मीठे नीम व गुडहल जैसे गमलों में लगाए जा सकने वाले पौधे भेंटस्वरूप लेना-देना भी इस अभियान का एक स्वरूप हो सकता है।

वर्षाजल को संरक्षित करने के लिये रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपने घर/प्रतिष्ठान पर अवश्य लगवाएं, इस हेतु आजकल शासकीय सहायता भी उपलब्ध है। प्रशासन से भी अपेक्षा है कि वह सड़कों के समीप की भूमि को कच्ची रखने की और वहां मध्यम बढ़त के वृक्ष लगाने की योजना बनाए अपेक्षाकृत सीमेंटीकरण के। इससे जलभराव की समस्या में भी कमी आएगी, सड़कों का कटाव रुकेगा व भूजलस्तर बढ़ेगा। एक संकल्प अपने आसपास सूख चुके अथवा अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुके जलस्रोतों के पुनरुद्धार का भी लें। उज्जैन में समाज के संकल्प से पवित्र गोवर्धन सागर पुनरुद्धार अभियान व चन्द्रभागा नदी का पुनर्प्रकटीकरण एक अद्भुत उदाहरण है। आइये भारतीय जीवन दर्शन के महत्वपूर्ण घटक प्रकृति संरक्षण को कहीं हरियाली अमावस्या तो कहीं नागपंचमी, कहीं कजलिया तीज, कहीं आर्षी देवता पूजन, कहीं वनसंचार को उज्जयिनी तो कहीं नदियों के पूजन को दिवासा का मेला के रूप में मनाएं और ऋतुओं की रानी वर्षा का धार्मिक, सामाजिक व स्पंदनमयी अभिनन्दन करें।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

वर्षा ऋतु में किये जाने वाले घरेलु प्रयोग

डॉ. रत्नदीप निगम

वर्षा ऋतु आते ही हमारे किसान मित्रों को अपने खेतों में बहुत सारे कार्य करने पड़ते है एवं साथ ही उनके द्वारा उत्पादित सब्जियॉ एवं फलों की मांग बाजार में बड़ जाती है लेकिन हमारे किसान मित्र बारिश के मौसम में सब्जियों एवं फलों का वितरण बाजार में नहीं कर पाते है। इसके कारण सब्जियों एवं फलों के दाम बढ़ जाते है। ऐसी स्थिति में हमारे किसान भाई न तो स्वयं का पोषण कर पाते है नही समाज का।

इन परिस्थितियों में हमारे किसान यदि अपने अनुभव व युक्ति से सब्जियों का उत्पादन अपने बाड़े, बड़े घर के बरामदे एवं छतों पर करें तो कम से कम स्वयं के उपयोग हेतु सब्जियों का उत्पादन तो कर ही सकते है। जैसे उदाहरण के लिए अभी टमाटर अधिक दाम में उपलब्ध हो रहे है तो कुछ गमलों में टमाटर, हरी मिर्च, अदरक जैसी सहयोगी सब्जियों को पैदा कर सकते है।

किसान भाई ऐसी कई नित्य उपयोगी सब्जियों के उत्पादन से स्वयं का एवं अपने पड़ोस में वितरण कर कुछ

आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते है। जैसे लौकी, गिलकी, तुरई ये बेल के रूप में बरामदे में उगाई जा सकती है। आर्थिक लाभ के साथ-साथ ये सब्जियां हानिकारक रसायनों से मुक्त होने के कारण स्वादिष्ट एवं पोषण से युक्त रहेंगी। ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयोग नगर में रहने वाले अन्य समाजजन भी कर सकते है। गमलों में शोभा के लिए पौधे लगाने वाले इन सहयोगी सब्जियों को उगाकर समाज हित में अपना सहयोग प्रदान कर सकते है। गमलों में उगाई जाने वाली सहयोगी सब्जियों में हरी मिर्च, टमाटर अदरक धनिया प्रमुख है।

देश मे गोबर गैस क्रांति

डॉ. भरत पाटीदार

भारत ऊर्जा क्रान्ति ला सकता है। आज दुनिया के सामने सबसे बड़ा खतरा ऊर्जा सुरक्षा का न होना है। यह माना जा रहा है कि पेट्रोलियम और कोयला स्थाई नही है। साथ ही ये ऊर्जा स्रोत प्रदूषणकारी है। इन ऊर्जा स्रोतों से आधुनिक एवं औद्योगिक विकास हुआ है किंतु पृथ्वी का सर्वाधिक विनाश भी इन्ही दोनों जीवाश्म ईंधन के उपयोग से हुआ है। भारत प्राचीन काल से ही दुनिया का मार्गदर्शक रहा है। तो भारतीय युवा तैयार हो जाओ। हम प्रदूषण जैसे स्लो पॉइजन और ग्लोबल वार्मिंग जैसे महाविनाशको से इस दुनिया को बचा सकते है।

दुनियां को कैसे बचाये इसके लिए कुछ भारतीय युवाओं को तकनीकी उन्नयन में लगना होगा। भारत देश में दुनियां में सबसे अधिक पशुधन है। यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा अवसर और गौरव की बात है। एक पशु गाय और भैंस से लगभग 5 से 7 किलोग्राम मीथेन गैस प्रतिदिन उत्पादित कर सकते है। मीथेन को कुछ खर्च से शुद्ध कर बस, कार, ऑटो, बाइक, पानी का पंप, विभिन्न प्रकार की मशीने चला सकते है।

देश मे लगभग 53 करोड़ पशु है। इस आधार पर देश में प्रतिदिन 32 लाख टन गोबर गैस का उत्पादन कर सकते है। जो पेट्रोल कार के 700 करोड़ किलोमीटर दूरी तय करने के बराबर है। जो 2800 करोड़ रुपये के विदेशी पट्रोल के खरीदने के बारबर है। अतः हम चाहे तो प्रतिदिन 2800 करोड़ रुपये विदेश जाने से रोक सकते है । साथ उतना ही पर्यावरण को भी स्वस्छ रखने में सफल हो पाएंगे। यह सौभाग्य पाने का अवसर ग्रामीण युवा समाज के पास है। आइये देश के लिए कुछ अच्छा करते है।

पुण्यतिथि पर पुण्य स्मरण
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

डॉ. सुब्रतो गुहा

एक पुरानी कहावत है- कुछ लोग थे जो समय के सांचे में ढल गए कुछ लोग थे, जो समय के सांचे में बदल गए।

समय की विभिन्न विसंगतियों के आगे सिर झुकाकर समय की धारा के साथ बहते जाना अति सरल कार्य है और अधिकांश नर-नारी यही मार्ग जीवन में अपनाते हैं- परन्तु कुछ ऐसे भी लोग इतिहास में हुए हैं जिन्होंने समय की धारा को ही सकारात्मक दिशा में बदलने की प्रतिज्ञा की और अपने जीवनकाल में उस प्रतिज्ञा को पूर्ण भी किया। ऐसे ही एक अत्यधिक प्रतिभा संपन्न बालक बाल गंगाधर का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र प्रान्त में रत्नागिरी शहर के शिक्षक गंगाधर तिलक के घर हुआ। विद्यालय में अपनी अद्वितीय बौद्धिक और शैक्षणिक प्रतिभा का परिचय देने के पश्चात बालगंगाधर ने दक्कन महाविद्यालय से कला संकाय में प्रथम श्रेणी में स्नातक उपाधि एवं तत्पश्चात सन् 1879 में शासकीय विधि महाविद्यालय से एल. एल. बी. की उपाधि प्राप्त की तथा वकालत का कार्य प्रारंभ किया। मात्र सोलह वर्ष की आयु में पिता का साया सिर से उठने के बाद भी उनकी संघर्षपूर्ण जीवन यात्रा निरन्तर जारी रही।

एक राष्ट्रवादी चिन्तक तथा भारत माता के निष्ठावान सपूत बाल गंगाधर मातृभूमि को विदेशी गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने हेतु प्रतिज्ञबद्ध थे। इस हेतु स्वतंत्रता आन्दोलन के अग्रणी नेता की भूमिका निभाने के साथ ही सामाजिक- शैक्षणिक- धार्मिक तथा सामाजिक स्तर पर भी देशवासियों में जागरूकता हेतु उन्होंने अत्यधिक प्रभावशाली कदम उठाए। वे एक समाज सुधारक थे जिन्होंने बाल विवाह तथा छुआछूत व जातिगत ऊँच-नीच की भावना के विरूद्ध निरन्तर संघर्ष किया।

सन् 1894 में तिलकजी ने सार्वजनिक गणेशोत्सव की परम्परा प्रारंभ की महाराष्ट्र प्रान्त के पुणे और मुम्बई में। शीघ्र ही भारत के प्रत्येक प्रान्त एवं शहर में हिन्दू समाज घरों में परिवार के साथ गणेशोत्सव न मनाते हुए अपने मोहल्लों में समस्त जातियों के हिन्दुओं के साथ सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने लगे- जिससे सामाजिक समरसता का भाव जाग्रत हुआ ताकि एक सशक्त हिन्दू समाज बने। इसी पवित्र उद्देश्य से सन् 1895 में तिलकजी ने छत्रपति शिवाजी की जयन्ती एवं शिवाजी के राज्यारोहण उत्सव को सार्वजनिक रूप से प्रारंभ किया । गीता रहस्य, आर्कटिक होम ऑफ वेद जैसी पुस्तकों के लेखन के माध्यम से सरल भाषा में उन्होंने सभी पीढ़ियों के हिन्दू नर-नारियों को हिन्दू धर्मग्रन्थों की महानता से परिचित करवाया। उनके उद्बोधनों में गोहत्या पर प्रतिबंध तथा गोरक्षा का भी संदेश सदैव रहता था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्वतंत्रता आंदोलन से वे सक्रिय रूप से जुड़े और शीघ्र ही समूचे देश में स्वाधीनता संग्राम उन्हीं के नेतृत्व में संचालित होने लगा। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल रूपी तीन महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाल-बाल-पाल की तिकड़ी के रूप में इतिहास में अमर है। तिलकजी महात्मा गांधी की पूर्णतः अहिंसक आन्दोलन की अवधारणा से सहमत नहीं थे- क्योंकि वे मानते थे कि मातृभूमि की स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जो हम विदेशी शासक से छीनकर लेंगे उससे याचना या भिक्षा नहीं माँगेंगे। तभी तो तिलकजी का नारा **स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा** सभी पीढ़ियों के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों हेतु प्रेरणास्रोत बन गया।

दिनांक 1 अगस्त 1920 में मात्र 64 वर्ष की आयु में इस महान विभूति का देहावसान हुआ, परन्तु तब भी और अब भी उनके राष्ट्रभक्ति के ओजस्वी विचार भारतवंशियों को प्रेरित करते रहे हैं, और सदैव करते रहेंगे। पूर्ण आदर भाव से उनके चरणों में यह पंक्तियाँ समर्पित-

आप तो चले गए हैं लेकिन, स्मृति शेष हृदय आँगन में।
तुलसी क्यारे दीप जलाते, अंकित सूरत भोली आंखन में।

संस्कृत भाषा का महत्त्व

डॉ. घनश्याम दीक्षित

संस्कृत शब्द से ही तात्पर्य है कि जिसमें पूर्ण शुद्धता और परिष्कृत रूप सन्निहित हो। सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु और क्त प्रत्यय से युक्त होकर संस्कृत शब्द की निर्मिति हुई है। इसी कारण इसे देवभाषा, देववाणी, गीर्वाणवाणी आदि का स्थान प्राप्त हुआ है। भारतवर्ष की यह अमूल्य और अनुपम निधि है। यदि यह कहा जाय कि संस्कृत से ही भारतवर्ष की पहचान होती है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। संस्कृत भाषा में ही भारत के प्राण निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर को सुरक्षित करने एवं उसकी ज्ञाननिधि को सर्वत्र प्रसारित करने हेतु संपूर्ण भारतवर्ष के संस्कृतानुरागी भारतीयों द्वारा इसी दिन संस्कृत दिवस मनाया जाता है।

एक बार का विद्यार्थी जीवन का संस्मरण मुझे याद आ रहा है कि जिस समय हमारे **पूर्व कुलपति स्व. डॉ.शिवमंगलसिंह सुमन भारत सरकार की ओर से राजदूत बनकर मॉरिशस देश गये थे** तब उनसे यह पूछा गया कि आप भारत के मूल निवासी हैं तो आप संस्कृत को तो भलीभांति जानते ही होंगे। संभाषण करने में भी दक्ष होंगे। परन्तु उस समय सुमन जी इसका उत्तर नहीं दे पाये तथा संकोचवश उन्होंने असमर्थता प्रकट की। पश्चात्तापवश उन्होंने उज्जैन आकर संस्कृत के प्रकाण्ड प्रज्ञाचक्षु विद्वान् स्व. प्रो. दयाशंकर वाजपेयी एवं प्रख्यात संस्कृतकवि स्व. प्रो. श्रीनिवास रथ को अपना गुरु बनाकर उनसे संस्कृत सीखी।

भारतवर्ष का समस्त प्राचीन ज्ञान भण्डार संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। संसार की कोई भी ऐसी पुरातन भाषा नहीं है, जिसकी संस्कृत से तुलना की जा सके। **चारों वेद, अट्ठारह पुराण, उपनिषद, षड्दर्शन, आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्मृतिग्रन्थ, रामायण, महाभारत, गीता आदि महनीय ग्रन्थ इसी भाषा में निबद्ध हैं।** पुरातनकाल में बोलचाल के लिये संस्कृत भाषा का ही प्रयोग किया जाता था। संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। लगभग सभी भाषाओं में यत्र-तत्र संस्कृत भाषा के शब्द दृष्टिगोचर होते हैं। संस्कृत को संस्कारित भाषा का गौरव तो प्राप्त है ही, इसी के साथ इसकी प्रामाणिकता के कारण ही वैज्ञानिकों द्वारा इसे कंप्यूटर प्रयोग हेतु सर्वश्रेष्ठ भाषा माना है। क्योंकि इसके कर्ता और क्रिया के पुरुष और वचन में अद्भुत समानता देखी जाती है, जो कि अन्य भाषा में नहीं दिखाई देती ।

एकमात्र संस्कृत ही ऐसी भाषा है जो मानवमात्र का कल्याण चाहती है। **वसुधैव कुटुम्बकम्** पृथ्वी पर रहने वाला प्राणीमात्र पारिवारिक सदस्य है। संस्कृत सभी लोगों को एकसमान व्यवहार करने की सीख देती है- **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्** अर्थात् सभी लोग साथ-साथ चलें सभी अपनी मधुर वाणी का व्यवहार करें तथा सभी परस्पर मन की बात को समझते हुए आगे बढ़ें।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

अर्थात् सभी के समान संकल्प (विचार) हों, समान हृदय हों, समान मन हों तथा एक-दूसरे को सदैव प्रसन्न रखें। कितना अद्भुत समन्वय प्रदर्शित करती है संस्कृत भाषा ।

संस्कृत की प्रसिद्धि तो इसी बात से प्रमाणित हो जाती है कि संस्कृत-ग्रन्थों का विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। यास्क के निरुक्त, पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतंजलि के महाभाष्य के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि उनके समय में संस्कृत दैनिक व्यवहार की भाषा थी। संस्कृत के कवि जगत की तुलना तो संसार के किसी कवि से नहीं की जा सकती। विश्वप्रसिद्ध आदिकवि वाल्मीकि, कौटिल्य, कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, भास, अश्वघोष, दण्डि, जयदेव इत्यादि द्वारा विरचित ग्रन्थों ने संसार के विद्वत्जनों को बरबस ही मोहित कर रखा है। संस्कृत ही विविध धर्म, मत, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग आदि को एकसूत्र में बांधने का काम करती है। संस्कृत के पठन-पाठन से परस्पर प्रेम, दया, उदारता, नैतिकता, सहानुभूति, भाईचारा, देशभक्ति, त्याग, समर्पण आदि के संस्कार स्वतः व्यवहार में आ जाते हैं। परिवार में सामंजस्य, सामाजिक एकता, धार्मिक सद्भाव, राजनीतिक एकता, सद्व्यवहार और भ्रष्टाचारमुक्त भारत बनाना है तो सभी भारतीयों को संस्कृत भाषा को अवश्य पढ़ना-पढ़ाना चाहिये।

इंदौर में अरमान और रईस ने किया 12 साल की आदिवासी लड़की का छत पर रेप, सरिया काटने आये थे

6 अप्रैल को इंदौर के बड़ीयाकीमा गाँव में एक आदिवासी घर पर तीन मजदूर काम करने आये थे, **इन मजदूरों के नाम अरमान, रईस और रईस थे।** ये मजदूर सरिया काटने आये थे, जब इन्होनें देखा कि लड़की घर पर अकेली है तो उसे किसी तरह से छत पर ले गए और तीनों ने उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

लड़की की उम्र महज 12 वर्ष बताई जा रही है, लड़की आदिवासी समुदाय से है और तीनों आरोपी मुस्लिम हैं आज सुबह इंदौर कलेक्टर इलय्या टी.राजा के निर्देश पर आरोपी अरमान द्वारा किया गया अतिक्रमण ढहाया गया।

नहीं आये जय भीम- जय मीम के झंडाबरदार

सीधी में हुई आदिवासी युवक के साथ हुई अमानवीय घटना पर जिन संगठनों और व्यक्तियों ने हिन्दुओं के ग्रन्थ -शास्त्रों -परम्पराओं को खूब गालियां दी थीं, उनमे सें कोई भी संगठन या उनके प्रतिनिधि कोई भी इंदौर में नाबालिग आदिवासी लड़की के साथ मुस्लिमों द्वारा किये गैंगरेप पर न्याय की मांग करने को नहीं आये।

वहीं विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ता संबन्धित खुड़ैल पुलिस थाने पर एकत्रित होकर अन्य दो आरोपी के खिलाफ भी कठोरतम कार्यवाही की मांग कर रहे हैं।

डॉ. हेडगेवार जन्मशताब्दी सेवा न्यास, इंदौर द्वारा एक दिवसीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के मध्य 'आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यशाला' आयोजित की गई।

इंदौर में यह कार्यशाला फायर टेक्नोलॉजी एंड सेफ्टी इंजीनियरिंग विभाग, आईपीएस एकेडमी, राज्य आपदा प्रबंधन विभाग व एमजीएम मेडिकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आईपीएस एकेडमी, इंदौर में आयोजित हुई।

कार्यक्रम में आपदा प्रबंधन से जुड़े प्रत्येक विषय जैसे अग्नि प्रबंधन, बोर्ड प्रबंधन व चिकित्सकीय प्राथमिक उपचार को शामिल किया गया।

राज्य आपदा प्रबंधन व मेडिकल कॉलेज की टीम द्वारा अग्नि प्रबंधन व सीपीआर (कार्डिओपल्मोनेरी पुनर्जीवन) जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर लाइव डेमो प्रदान किया।

यह कार्यशाला दो सत्रों में संपन्न की गई। प्रथम सत्र में आई पी एस अकैडमी की टीम के द्वारा फायर एंड सेफ्टी पर प्रेजेंटेशन और प्रेक्टिकल डेमोंस्ट्रेशन किया गया द्वितीय सत्र में राज्य आपदा प्रबंधन की टीम के द्वारा दुर्घटना में प्राथमिक चिकित्सीय उपचार तथा एम जी एम मेडिकल कॉलेज की टीम के द्वारावीसीपी आर(कार्डिओपलमोंनेरी पुनर्जीवन) का प्रशिक्षण दिया गया।

नेमावर थाने के पदस्थ राजाराम वास्कले ने डूबते लोगों को बचाने में अपना जीवन आहूत कर दिया

रविवार दोपहर में देवास जिले के नेमावर थाने में पदस्थ राजाराम वास्कले को सूचना मिली की समीप कि नदी में बने स्टॉप डेम में एक लाश दिखाई दी है। बारिश के कारण नदी का जल स्तर बड़ा हुआ था। वहां मौजूद लोगों से जब लाश नहीं निकली तो राजाराम वास्कले गहरे उतर गए और स्टॉप डेम से लाश निकालने का प्रयास किया। पहले प्रयास में वह सफल नहीं हुए तो दोबारा गोता लगाया।

लेकिन वे खुद ही गहरे पानी में फंस गए। यह देख वहां मौजूद लोगों और अन्य पुलिसकर्मियों ने उन्हें नदी से बाहर निकाला और इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें हरदा रैफर कर दिया गया था। इस हादसे के बाद देवास पुलिस विभाग में शोक छा गया। सूचना मिलते ही सभी अधिकारी मौके पर पहुंच गए थे।

धनबाद – संघ कार्यकर्ता एवं समाजसेवी शंकर प्रसाद की गोली मारकर हत्या

झारखंड धनबाद जिले के पूर्वी टुंडी थाना क्षेत्र के आरएसएस कार्यकर्ता एवं ग्राम रक्षा दल के सदस्य दूमा गांव निवासी शंकर प्रसाद की अज्ञात अपराधियों ने देर रात गोली मार कर हत्या कर दी. ग्राम रक्षा दल के सदस्य के रूप में रात को शहरपुरा जा रहे थे. रास्ते में दूमा कब्रिस्तान के पास अज्ञात अपराधियों ने गोली मारी।

पुलिस के अनुसार अपराधियों ने ताबड़तोड़ छह गोली मारकर शंकर प्रसाद की हत्या की। घटना मंगलवार (11 जुलाई) देर रात की है शंकर प्रसाद पिछले तीन दशक से संघ से जुड़े हुए थे। वे धनबाद जिला वनवासी कल्याण केन्द्र के जिला कार्य प्रमुख थे इस घटना से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस घटना की जांच में जुट गई है ग्रामीणों ने हत्यारों की अविलंब गिरफ्तारी की मांग की।

शंकर प्रसाद सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते थे- शंकर प्रसाद के भतीजे ने बताया कि पुलिस का सहयोग करने के कारण वह कुछ लोगों की आंखों की किरकिरी बन चुके थे। पुलिस को वह लगातार सूचनाएं भी दिया करते थे भतीजे का कहना है कि शूटरों को बुलवाकर उनकी हत्या करवाई गई है। उन्होंने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की परिजनों ने कहा कि पुलिस अगर मामले में लापरवाही बरतती है तो वे सड़क से लेकर सदन तक आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

औरंगजेब ने शिवलिंग को खोदने का प्रयास किया, तो बस जटाएं हाथ लगीं, आज जटाशंकर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है शुजालपुर का यह मंदिर

शुजालपुर में जमधड़ नदी के किनारे जटाशंकर महादेव की स्थापना औरंगजेब के शासनकाल के पूर्व 16वीं शताब्दी में हुई। औरंगजेब ने अपने समय में हजारों हिन्दू धार्मिक स्थलों को तोड़ा।

ऐसा ही उसने शुजालपुर के इस महादेव मंदिर में भी किया, उसके सिपहसालारों ने जटाशंकर मंदिर के शिवलिंग को खोदने का प्रयास किया, तो वे शिवलिंग को अपने स्थान से हिला भी नहीं पाए और अधिक खुदाई करने पर शिवलिंग का सिरा पाने के स्थान पर उनके हाथ केवल जटाएं ही लगी और उन्हें निराश होकर लौटना पड़ा। तभी से यह स्थान जटाशंकर महादेव के नाम से जाना जाता है।

वनवासियों के जबरिया मतांतरण के मामले में पहली सजा

3 आरोपियों को 2-2 वर्ष कारावास

झाबुआ सत्र न्यायालय ने 50 हजार का अर्थदंड भी लगाया

जनजातीय बहुल झाबुआ जिले में प्रलोभन देकर चर्च/मिशनरी द्वारा जबरिया कन्वर्जन कराने के एक मामले में सत्र न्यायालय ने 3 आरोपियों को दो-दो साल की सश्रम कारावास की सजा के साथ 50 हजार का अर्थदंड भी आरोपित किया है। लालच के जरिये वनवासियों को ईसाई बनाने के एक प्रकरण में सत्र न्यायाधीश लखनलाल गर्ग ने फैसला दिया है। इस फैसले के बाद यह प्रमाणित हो गया कि आदिवासी बहुल झाबुआ जिले में प्रभाव और दबाव के जरिये मिशनरियों द्वारा कन्वर्जन का खेल खेला जा रहा है। लोक अभियोजक मानसिंह भूरिया ने बताया कि प्रकरण क्रमांक 10/2022 में दिनांक 19 जुलाई को पारित निर्णय में ग्राम बिसौली के जामसिंह पिता जोगड़िया (क्रिश्चियन), अनसिंह पिता गलिया (क्रिश्चियन) तथा मंगू पिता मेहताब (क्रिश्चियन) को धार्मिक स्वतंत्रता अध्यादेश 2020 (विधेयक 2021) की धारा-5 के अपराध का दोषी करार दिया गया।

इस प्रकरण में इन तीनों को न्यायालय ने दो- दो वर्ष का सश्रम कारावास और 50 हजार के अर्थदंड से दंडित किया है। जिले में यह पहला प्रकरण है जिसमें धार्मिक स्वतंत्रता (अवैध धर्मांतरण) के मामले में सजा सुनाई गई है। साक्ष्य को विश्वसनीय और प्रामाणिक माना- उक्त घटना में आरोपी जामसिंह, मंगु एवं अनसिंह के विरूद्ध प्रकरण पंजीबद्ध विवेचना में लिया गया। इस प्रकरण की विवेचना सहायक उपनिरीक्षक प्रेमसिंह परमार द्वारा की गई। प्रकरण में आरोपियों के मेमोरंडम के आधार पर बाईबिल, अंकसूची, शपथ पत्र, आरोपी अनसिंह से एक स्टील का लोटा जप्त कर पंचनामे बनाए गए। गवाहों के कथन के आधार पर पुलिस ने न्यायालय में धार्मिक स्वतंत्रता अध्यादेश 2020 (विधयेक 2021) की धारा-5 के तहत अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। न्यायालय ने अभियोजन की ओर से परीक्षित साक्ष्य को विश्वसनीय व प्रमाणित मानकर आरोपियों को कठोर करावास एवं अर्थदंड से दंडित किया। हिंदू संगठनों में उत्साह अभियोजन की ओर से प्रकरण का संचालन लोक अभियोजक मानसिंह भूरिया द्वारा किया गया। इस प्रकरण के फैसले के बाद हिन्दू संगठनों में उत्साह नजर आ रहा है। जिले में धर्मांतरण को लेकर मुखर विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल से जुड़े आजाद प्रेमसिंह डामोर के उन आरोपों को भी बल मिलेगा जो उनकी ओर से लगाए जा रहे हैं। आजाद प्रेमसिंह ने बताया कि यह हिन्दू संगठन की एकता की जीत है यदि इसी तरह ग्रामीण जन धर्म के प्रति जागरूक होंगे तो अवैध रूप से धर्मांतरण का खेल खेलने वालों को झाबुआ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

सामूहिक सभा में की थी ईसाई बनाने की बात - ग्राम बिसौली में 26 दिसंबर 2021 को सुबह 8 बजे रविवार को सामूहिक सभा कर आदिवासी जाति के लोगों का धर्मांतरण करने से जुड़ा मामला सामने आया था। इस मामले में आवेदक टेटिया पिता हुरू बारिया ने पुलिस थाना कल्याणपुरा में ग्राम में कुछ लोगों पर अवैध रूप से प्रलोभन और दबाव बनाकर धर्मांतरण करने की शिकायत दर्ज कराई थी। जिसमें फादर जामसिंह पिता जोगडिया डिंडारे निवासी बिसौली, मंगु पिता मेहताब भूरिया निवासी मोकमपुरा, पास्टर अनसिंह पिता गलिया निनामा ग्राम बिसौली पर अवैध रूप से धर्मांतरण कराने का आरोप लगा था।

अवंतिका नगरी से बाबा महाकाल की प्रथम सवारी के भव्यतम - दिव्यतम दर्शन

धार का परमारकालीन धारेश्वर महादेव मंदिर, जिनकी पालकी में राजा भोज भी पैदल चलते है, आजतक जीवंत है परंपरा

धार का यह अतिप्राचीन शिव मंदिर आमजन की आस्था एवं श्रद्धा का केंद्र है। इन्हें धार के ईश्वर अर्थातब धारेश्वर, धारनाथ आदि नामों से संबोधित किया जाता है। धारेश्वर महादेव परमार कालीन राजाओं के आराध्यदेव रहे हैं। कहा जाता है कि यह मंदिर राजा भोज के काल का है। धारेश्वर मंदिर का हजारों वर्षों से ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व रहा है। धारेश्वर महादेव धार के राजा कहलाते हैं। प्रतिवर्ष सावन माह में भक्त दूर-दराज से महादेव के दर्शन को आते हैं एवं मंदिर हर हर महादेव एवं बोल बम के नारों से गुंजायमान रहता है। सावन माह में भगवान धारनाथ प्रजा के हाल जानने नगर भ्रमण पर भव्य छबीने के रूप में निकलते हैं। यह परंपरा राजा भोज के समय से चली आ रही है एवं राजा भोज स्वयं भी इस पालकी यात्रा में पैदल चलते थे। यह मंदिर नगर के धारेश्वर मार्ग पर स्थित है एवं सम्पूर्ण वर्ष दर्शन के लिए खुला रहता है।

नागचंद्रेश्वर मंदिर देश का ऐसा शिव मंदिर जहां साल में केवल एक बार होता है भगवान का दर्शन

सितम्बर माह के प्रमुख व्रत त्यौहार

ता. 3 गणेश चतुर्थी व्रत
ता. 8 विश्व साक्षरता दिवस, महाकाल सवारी
ता. 11 संत विनोबा भावे जयंती
ता. 13 अहिल्याबाई होलकर पु.ति.
ता. 14 हिन्दी दिवस
ता. 15 विश्वश्वैरया जयंती
ता. 25 पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341